डॉ० अनिता कुमारी सिंह
स्नातकोत्तर हिन्दी-विभाग
आर० एन० कॉलेज, हाजीपुर

तृतीय सेमेस्टर – चतुर्दश पत्र

विषय – काव्य प्रयोजन – काव्य प्रयोजन का अर्थ है काव्य रचना से प्राप्त फल। जैसे- धन, यश, आनन्द आदि। भारतीय आचार्यों ने काव्य या साहित्य को सोद्देश्य माना है। काव्य किस उद्देश्य से लिखा जाता है, किस उद्देश्य से काव्य पढ़ा जाता है।

भरत मुनि ने नाटक के प्रयोजनों पर विचार करते हुए लिखा है —

"धर्म्यं यशस्यं आयुष्यं हितं बुद्धि विवर्धनम्।
लोको उपदेश जननम् नाट्यमेतद् भविष्यति॥"

भरत मुनि द्वारा निर्दिष्ट इन प्रयोजनों में भौतिक प्रयोजनों का व्यापक उल्लेख है, किन्तु काव्य का प्रधान उद्देश्य आनन्द प्राप्ति है।

भामह ने काव्य प्रयोजनों की चर्चा करते हुए लिखा है —

believe you have to be better than everybody else. I believe you have to be better than you ever thought you could be . – ken Venturi

Appointments

'धर्मार्थ काम मोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च।
करोति कीर्ति प्रीतिं च साधुकाव्य निबन्धनम्॥

अर्थात् धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति कलाओं में निपुणता के साथ-साथ उत्तम काव्य से कीर्ति और प्राप्ति (आनन्द) की भी प्राप्ति होती है।

भामह के प्रयोजन व्यापक हैं तथा उनमें कवि और पाठक दोनों के काव्य प्रयोजनों की चर्चा है।

आचार्य वामन —

'काव्यं सद्दृष्टा दृष्टार्थं प्रीति - कीर्ति - हेतुत्वात्।"

अर्थात् काव्य में दो प्रमुख प्रयोजन हैं:— प्रीति अथवा आनन्द साधना
कीर्ति अथवा यश प्राप्ति।

आचार्य मम्मट ने अपने ग्रन्थ 'काव्य-प्रकाश' में काव्य प्रयोजनों पर विस्तृत चर्चा की है। उनके अनुसार —

nday International Yoga Day

...im to success if you want it ; just do what you love and believe in , and it will come Naturally . – David Frost

काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परिनिर्वृतये कान्तासम्मित तयोपदेशयुजे॥

अर्थात काव्य यश के लिए, अर्थ प्राप्ति के लिए, व्यवहार ज्ञान के लिए, अमंगल शांति के लिए, अलौकिक आनन्द की प्राप्ति के लिए और कान्ता के समान मधुर उपदेश प्राप्ति के लिए प्रयोजनीय होते हैं।

मम्मट ने मूलतः छः काव्य प्रयोजन बताए हैं:—

1. यश प्राप्ति,
2. अर्थ प्राप्ति,
3. लोक व्यवहार ज्ञान,
4. अनिष्ट के निवारण या लोकमंगल
5. आत्मशान्ति या आनन्दोपलब्धि,
6. कान्तासम्मित उपदेश।

यश प्राप्ति की इच्छा से कविगण काव्य-रचना में प्रवृत्त होते रहते हैं। अतः यश प्र को मम्मट ने काव्य का प्रमुख प्रयोजन माना है। काव्य रचना करके अनेक कवियों ने

A somebody was once a nobody who wanted to and did. – John Burroughs

अक्षय यश प्राप्त किया है। कालिदास, सूरदास तुलसी, बिहारी जैसे अनेक कवि आज भी अमर हैं। तुलसीदास जी ने 'रामचरित मानस' में लिखा है — "निज कवित्त केहि लाग न नीका।
सरस होउ अथवा अति फीका॥
जो प्रबन्ध कुछ नहिं आदरहिं।
सो श्रम वादि बाल कवि करहिं॥"

अर्थात अपनी कविता किसे अच्छी नहीं लगती, चाहे सरस हो या फीकी, किन्तु जिस रचना को विद्वानों का आदर प्राप्त नहीं होता, उस रचनाकार का श्रम व्यर्थ है।

जायसी ने भी 'पद्मावत' में यह स्वीकार किया है कि मैं चाहता हूँ कि अपनी कविता के द्वारा संसार में जाना जाऊँ।

"ओ मैं जान कवित्त अस कीन्हा।
मकु यह रहै जगत महं चीन्हा॥"